आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 15/03/2026; Revised: 18/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

समकालीन हिंदी ग़ज़लों में चेतना के विविध परिदृश्य

डॉ. दादासाहेब नारायण डांगे

सहयोगी प्राध्यापकहिंदी , विभाग,

कला विज्ञान ,एवं वाणिज्य महाविद्यालय, राहाता

मेल -dndange@gmail.com

भ्रमण ध्वनी: ९९२२४६८५०७

डॉ. दादासाहेब नारायण डांगे, समकालीन हिंदी ग़ज़लों में चेतना के विविध परिदृश्य, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(126 -132)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19500587

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शोध आलेख सारांश :

साहित्य और समाज का प्राचीन काल से ही अटूट संबंध रहा है ।साहित्य को हमेशा से ही समाज को उसके वास्तविक रूप में अभिव्यक्त करने का प्रभावशाली माध्यम माना गया हैहिंदी । साहित्य की भिन्न-भिन्न विधाएं हैं, जिनमें ग़ज़ल एक अत्यंत सफल एवं प्रभावी विधा के रूप में उभरकर सामने आयी है । समकालीन युग में गजल विधा युगीन चेतना को प्रखरता से अभिव्यक्त कर रही है ।आज ग़ज़ल मनुष्य जीवन से जुडे विभिन्न आयामों को यथार्थ रूप में व्यक्त करने में सक्षम है। किसी भी भाषा के साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना को सजगता से प्रस्तुत किया जाता है। परंतु हिंदी ग़ज़ल ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।हिंदी ग़ज़ल अब केवल प्रेम एवं सौंदर्य को अभिव्यक्त करने तक सीमित नहीं रही है, बल्कि समसामाईक जीवन में जी रहे आम आदमी की हर एक समस्या के विरुद्ध तीव्र आक्रोश व्यक्त करनेवाली एक सशक्त विधा बनकर सामने आयी हैजो , सही अर्थ में सामान्य व्यक्ति की आवाज बनी है ।समकालीन कवियों ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से वर्तमान समाज की सभी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सांस्कृतिक विसंगतियों को अत्यंत बेबाकी के साथ उजागर किया है। जब भी समाज में नये विचारों

एवं भावनाओं का प्रस्फुटन हुआ है, तबतब- समाज में एक नई चेतना का विकास होता हुआ हम देख सकते हैं ।अर्थात, साहित्य में चेतना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है यह स्पष्ट है ।

बीज शब्द: चेतना, परिदृश्य, सामाजिकता, राजनीति,धर्म ,मनोवैज्ञानिकता , पर्यावरण, सांस्कृतिकता, राष्ट्रीयता,व्यवस्था विरोध , विषमता मानवीय ,साम्राज्यवाद ,मूल्य आदि ।

प्रस्तावना :

साहित्य में चेतना के विभिन्न परिदृश्य या आयाम होते हैं ।जैसे, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, धार्मिक चेतना, सांस्कृतिक चेतना, मनोवैज्ञानिक चेतना, राष्ट्रीय चेतनाव्यक्तिवादी , चेतना, नारी चेतना, पर्यावरणीय चेतना आदि। हिंदी ग़ज़लों में चेतना के इन सभी आयामों को हम देख सकते हैं। इन्हीं आयामों के द्वारा हिंदी ग़ज़ल मानवीय मूल्यों ,विसंगतियोंअसमानता ,ओंशोषण , तथा भ्रष्टाचार, साम्राज्यवाद आदि विभिन्न समस्याओं को प्रखरता से मुखरित करती है। हिंदी ग़ज़ल ने हमेशा से ही वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए सामान्य आदमी को प्रेरणा दी हैआम । आदमी को संघर्ष करने की प्रेरणा दी हैसाथ । ही आम आदमी में आशावादी दृष्टिकोन को भी निर्माण करने का सफल प्रयास किया है ।समकालीन हिंदी ग़ज़लों में सामाजिक चेतना के अंतर्गत आनेवाली विभिन्न विसंगतियों जैसे ,गरीबी, भूखमरी ,महँगाई ,शोषण तथा जातिवाद तथा सामाजिक विषमता आदि को वास्तविक रूप में चित्रित किया है ।सांस्कृतिक चेतना के अंतर्गत प्रेम, सौंदर्य, सत्य,न्याय , सौहार्द, परोपकार तथा आधुनिक भावबोध आदि मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गयी है ।राजनीतिक चेतना के अंतर्गत शोषण, भ्रष्टाचार, स्वार्थता, साम्राज्यवाद, भ्रष्ट शासन व्यवस्था आदि का यथार्थ चित्रण किया गया हैसाथ , ही इन समस्याओं के विरुध्द आम आदमी के संघर्षगरीबों ,मजदुरों , के अधिकारों की मांग की है ।राष्ट्रीय चेतना के अंतर्गत अतीत गौरव, राष्ट्रीयता, देश प्रेम को जगाने का प्रयास किया है ।साथ ही व्यक्ति के जीवन दर्शन ,धार्मिक आस्था तथा दार्शनिक चिंतन को भी प्रकट किया है। मनोवैज्ञानिक चेतना के अंतर्गत व्यक्ति की कुंठा, घुटन, अकेलेपन , ,संघर्ष अवसाद, आक्रोश आदि को सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है, साथ ही पारिवारिक विघटन, टूटते रिश्तों तथा विषमताओं पर तीखा प्रहार किया है। हिंदी ग़ज़लों में सामाजिक विसंगतियों के प्रति आम आदमी के आक्रोश एवं आधुनिक फैशनपरस्ती पर तीखा व्यंग्य कसा है, जो पाठकों को सोचने पर बाध्य करती है ।प्रस्तुत शोध आलेख में हिंदी ग़ज़लों में व्यक्त इसी चेतना के विविध आयामों पर विस्तृत रूप से शोधकार्य करने का प्रयास किया गया है ।

शोध आलेख का विश्लेषण:

सामाजिक चेतना अर्थात समाज ,में व्याप्त शोषण,भ्रष्टाचार , विसंगति सामजिक ,विषमता, गरीबी, भूखमरीवर्गभेद , आदि विभिन्न प्रकार की समस्याओं के विरुद्ध आवाज उठानासमाज । मन में चेतना का संचार करना हैहिंदी । ग़ज़लों में इन सभी विषमताओं के विरुद्ध निरंतर आवाज उठायी गयी हैइन । समस्याओं के खिलाफ हिंदी ग़ज़ल हमेशा से ही आम आदमी के मन में चेतना का स्वर जागृत करती रही है। समकालीनहिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर दुष्यंत कुमार ने सही अर्थ में हिंदी ग़ज़ल को सामाजिक सरोकारों से जोडने का प्रयास किया है ।उनके साये में धूप ग़ज़ल संग्रह में संकलित उक्त ग़ज़ल आम आदमी को सामाजिक बदलाव की प्रेरणा देती हैजो , आज भी प्रासंगिक लगती है।

हो“ गयी है पीर पर्वतसी पिघलनी- चाहिए, इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार ,परदों की तरह हिलने लगी, शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
हर सड़क पर, हर गली मेंहर , नगरहर , गाँव में, हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहींमेरी , कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सहीहो , कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए1।"

यह ग़ज़ल समाज की वास्तविकता को बखूबी अभिव्यक्त करने के साथ- साथ समाज परिवर्तन करने की भी क्षमता रखती हैयह । ग़ज़ल समाज में व्याप्त दुख एवं पीडा को मार्मिकता से उजागर करती हैसाथ , ही सामान्य व्यक्ति को व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा भी देती हैसामाजिक । चेतना के संदर्भ में डॉ . सादिका नवाब 'साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल 'नामक किताब की प्रस्तावना में लिखती हैसाठोत्तरी" - हिंदी ग़ज़लें बुनियादी तौर पे विसंगतियों पर प्रहार करती हैवह । आज के भ्रष्ट व्यवस्थाभ्रष्ट , राजनीति, कालाबाजारी, बेरोजगारी, महंगाईआम , आदमी की वेदनाएँसमस्या ,एँजीवन , संघर्ष सवे जुड़ी आशा- निराशा सभी के बिंब प्रस्तुत करती है 2।"उनके इसी कथन को ग़ज़लकार अदम गोन्डवी ने अपनी उक्त ग़ज़ल के द्वारा स्पष्ट रूप से व्यक्त किया हैवे । कहते हैंभूख" - के अहसास को शेरोसुख-ःन तक ले चलोया , अदब को मुफ़लिसों की अंजुमन तक ले चलो।

खुद को घायल कर रहें हैं गैर के धोखे में लोग, इस अहद को रोशनी के बाँझपन तक ले चलो 3"। इससे यह स्पष्ट होता है कि, किस प्रकार आम आदमी वर्तमान शासन व्यवस्था के चलते आतंकित एवं पीडित हैउनके । इसी भय एवं पीडा को दिखाकर लेखक आम आदमी को व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए जागृत करते हैं ।

राजनीतिक चेतना अर्थात,स्वार्थता , सत्ता पिपासा, कुशासन, धोकाधडी -लूट ,खसोट ,नेताओं की दोगली नीति, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा राजनीतिक षडयंत्र के विरोध में प्रखरता से आवाज उठाना । भ्रष्ट शासन व्यवस्था का विकृत चेहरा समाज के सामने लाना तथा आम आदमी को भ्रष्ट शासन व्यवस्था के खिलाफ़ संघर्ष करने के लिये खड़ा करना समकालीन हिंदी गजल का मुख्य उद्देश्य रहा हैदुष्यंत । कुमार ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से भ्रष्ट शासन व्यवस्था के खिलाफ़ निरंतर आवाज उठायी हैहमेशा । वे आम आदमी को व्यवस्था के विरुद्ध लड़ने के लिये प्रेरित करते रहें हैंउनकी । साये में धूप ग़ज़ल संग्रह में संकलित उक्त ग़ज़ल इसका सही उदाहरण हैदुष्यंत । कुमार कहते हैं -

कहाँ"तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए ,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए 4।"

नेता लोग चुनाव के पहले किस प्रकार आम जनता को अलग अलग-वादें करते हैंकैसे । उनकी भावनाओं के साथ खेलते हैंउ ।नके भोलेपन का फायदा उठाकर उन्हें बरगलातें हैं और अपना स्वार्थ सिध्द करते हैंचुनकर । आने के बाद फिर आम जनता को भूल जाते हैंउनकी । इसी भ्रष्ट नीति एवं शोषण करने की प्रवृत्ति को उक्त ग़ज़ल में दुष्यंत कुमार ने यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है।

आज देश में वोटों की राजनीति चल रही हैदेश । के नेता भोली- भाली जनता को पैसों के बलपर , -कभी कभी डरा धमकाकर-खरीद लेते हैं उन्हें ।बहला- फुसलाकर, झुठें वादें कर धोका दे रहें हैंनेता ।ओं के साथ- साथ उद्योगपति, पूँजीपतिबिल्डर , आदि सभी एक होकर समाज को लूट रहें हैंक्योंकि । वें बड़े आदमी हैउनके । पास पैसा एवं सत्ता हैइसीलिए । उन्हें गरीबों का खून चुसने का अधिकार प्राप्त हुआ है । उनकी इसी अधर्मी एवं भ्रष्ठ प्रवृत्ति को बिस्मिल साहब ने अपनी ग़ज़ल में व्यक्त किया हैवे । कहते हैं -

उससे" न कर सवाल बड़ा आदमी है वो,
करने दे गोलमाल ,बड़ा आदमी है वो 5।"

इसीप्रकार वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करते हुए समकालीन ग़ज़लकार हरेराम समीप कहते हैं -

बदलते" हालात बतलाना जरूरी हो गया,
इसलिए मुझको ग़ज़ल गाना जरूरी हो गया6।"

पिछले कुछ दशकों से हिंदी ग़ज़लों ने दुष्यंत कुमार की परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैउसी । परंपरा में समकालीन ग़ज़ल लेखक हरेराम समीप का नाम विशेष उल्लेखनीय है ।दुष्यंत कुमार की परंपरा को आगे बढ़ानेवाले ग़ज़लकारों में राजेश रेड्डी का भी नाम लिया जा सकता हैउन्हों ।ने तीन ग़ज़ल संग्रह लिखें हैं, जिंका नाम है- उड़ानजूदव , और आसमान से आगे ।उनकी ग़ज़लों में समाज एवं मनुष्य जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता हैवर्तमान । समाज धर्म तथा धार्मिकता राजनीति के लिये प्रमुख विषय बन गया हैनेता । धर्म के नाम पर आम जनता का शोषण करते हैअपना । स्वार्थ सिद्ध करने के लिये उनके लिये धर्म एक हथियार बन गया हैइनके । अलावा कुछ धर्म के तथाकथित ठेकेदार भी धर्म के नाम पर लोगों को लुटते रहते हैंइसी । वजह से समाज में जाति एवं धर्म के नाम पर हमेशा संघर्ष चलता रहता हैइन । लोगों ने धर्म का आधार लेकर समाज पर धाक जमाए रखा हैरइसप । राजेश रेड्डी की उक्त ग़ज़ल मार्मिक टिपण्णी करती है ।

पहले“ टुकड़ो में बँटी सारी ज़मीन फिर ,असमों,
अब खुदा भी बँट गया मज़हब के हकदारों के बीच7।”

इन लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए अब ईश्वर को भी बाँट लिया है।

वर्तमान समय में राजनीति का स्तर बहुत ही गिर चुका हैनेता ।ओं के मन में आए तो वे अपने ही देश को बेचकर खा सकते हैंआम । जनता का इतना शोषण अंग्रेजों ने नहीं किया होगा, जितना ये नेता लोग कर रहें हैंइन्हें । सिर्फ़ सत्ता, पैसा, सुरा और सुंदरी से मतलब हैये । सभी उसी के लिए राजनीति में आते हैं । इन सभी नेताओं की कथनी और करनी में बहुत अंतर हैउनकी । इसी भ्रष्ट एवं दोगली नीति पर मशहूर ग़ज़लकार अदम गोन्डवी अपनी ग़ज़ल के माध्यम से करारा प्रहार करते हैवे । कहते हैं-

जो“ डलहौजी न कर पाया, वो ये हुक्काम कर देंगेकमिशन । दो तो हिंदुस्थान को निलाम कर देंगे।
सुरा और सुंदरी के शौक में डुबे हुए रहबरदिल्ली , को रंगीलशाह का हम्माम कर देंगे।
ये वंदे मातरम का गीत गाते हैं सुबह उठकर, मगर बाजार में चीजों का दुगना दाम कर देंगे।
सदन को घूस देकर बच गई कुर्सी तो देखोगे, अगली योजना में घूसखोरी आम कर देंगे8।”

उक्त ग़ज़ल से यह स्पष्ट हो जाता है कि, देश में राजनीति का स्वरूप अत्यंत खराब हुआ हैनेता । अब अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये अपने देश को बेच कर खाने में भी पीछे नहीं हटेंगेयही । इस ग़ज़ल को देखकर स्पष्ट होता है ।

भारत को आजादी मिले ७५ साल होकर गयेपरंतु , फिर भी आम आदमी स्वतंत्र नहीं हो पाया है । उसे आज भी विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड रहा हैउसमें । एक ज्वलंत समस्या है, साम्प्रदायिक्ता कीअंग्रेजों । ने जो विभाजन की रेखा हिंदु और मुसलमानों के बीच खींची थीवह , आज भी हैसमाज। व्याप्त इस धार्मिक विषमता को लेकर कवि राम प्रसाद बिस्मिल कहते हैं -

पहले“ तो फकत हिंदु थे, मुस्लिम थेमगर , आज बारूद है, त्रिशूल है, तलवार है हम लोग 9।”

इससे स्पष्ट होता है कि, समाज में किस तरह साम्प्रदायिक्ता हावी है और इसके लिये हम ही जिम्मेदार हैं । नेतालोग वोटों के लिये धर्म के नाम पर हमें एकदुसरे के साथ लड-ा़वातें है और हम बिना सोचे- समझें आपस में लड़ते रहते हैंधर्म । के नाम पर समाज में चलनेवाले फ़रेब,मारकाट , लूट- खसोट आदि के साथ - साथ साम्प्रदायिक भेद को लेकर कवि गोपालदास नीरज खेद प्रकट करते हैइसीलिये । वे समाज में व्याप्त इस साम्प्रदायिक विषमता को मिटाकर मानवता की फुहार लगाना चाहते हैंवे । कहते हैं -

अब" तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाएजिसमें । इंसान को इंसान बनाया जाए।

जिसकी खुशबू से महक जाए पडोसी का भी घरलफु , इस ़किस्म का हर स्मित खिलाया जाए10।"

आज पर्यावरण के रक्षण को लेकर समूचा विश्व चिंतित है समकालीन ।हिंदी ग़ज़लों में दो प्रकार से पर्यावरण चेतना को दर्शाया हैएक । पर्यावरण प्रदूषण और दुसरा पर्यावरण संवर्धनइसपर । सभी ओर से जन जागृती का काम चल रहा हैसरकार । भी इस कार्य में प्रयासरत हैवर्तमान । में यह एक वैश्विक समस्या बनकर उभरी हैइंसान । ही अपने स्वार्थ के लिये प्रकृति का विनाश कर रहा है जिससे ।न केवल मनुष्य जीवन को ख़तरा है, बल्कि प्रकृति से निर्मित सभी जीवों को भी ख़तरा है समकालीन ।हिंदी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में इस समस्या पर अपनी कलम चलायी है। पर्यावरणीय चेतना को लेकर उन्होंने लोगों को सचेत करने का प्रयास किया हैपर्यावरणीय । चेतना को हम उक्त ग़ज़लों में देख सकते हैंशरद । मिश्र कहते हैं -

बदबू" देतें हैं पवन के झोंके, उंचे उड़ते विमान रोते हैं11।"

अर्थातहवा , में बहुत अधिक प्रमाण में प्रदूषण फैला है ।इसीप्रकार एक अन्य ग़ज़ल में चंद्रसेन विराट कहते हैं -

धुंद" का वातावरण है इन दिनोंकैद , कुहरे में किरण है इन दिनों 12।"

कवि कहते हैं, आजकल प्रदूषण के कारण सुरज की किरण भी साफ साफ -नज़र नहीं आतीसभी । ओर धुंद का वातावरण है जिससे ।प्रकृति पर गहरा संकट आया हैवाहनों । और मिलों से निकलनेवाला धुआँ मनुष्य , पशु पक्षियों प्राणियों तथा ,खेत खालिहानों -को हानि पहुंचा रहा हैसारा । पर्यावरण जहरीला बन गया है । पर्यावरण पर आये इस भयावह संकट की ओर इशारा करते हुए कवि चंद्रसेन विराट कहते हैं -

मिल" की चिमणी का धुआँ हर खेत पर छाने लगाअब , शहर वाला प्रदूषण गाँव तक आने लगा13।"

पेडों की कटाई के कारण पर्यावरण का ़ह्रास हो रहा हैसाथ । ही इससे बारीश का भी प्रमाण न्यूनतम हो गया हैजिससे । किसानों की समस्या बढ़ गयी हैंजल । की समस्या से जूझना पड़ रहा है शरद ।मिश्र की उक्त ग़ज़ल इस समस्या पर मार्मिकता से भाष्य करती हैवे । कहते हैं-

गिरते" हुए पलों ने कहा झाडियों से यह, इस वन में अगली बार आएगी नहीं बहार14।"

शहरीकरण और बढ़ती आबादी की वजह से प्रकृति विनष्ट हो रही हैमनुष्य । जीवन पर संकट बढ़ रहा है । समकालीन कवियों ने अपनी ग़ज़लों में इसपर सूक्ष्मता से भाष्य किया हैपर्यावरणीय । चेतना को उजागर किया है ।

समकालीन हिंदी ग़ज़लों के द्वारा कवियों ने राष्ट्रीय चेतना को भी बखूबी अभिव्यक्त किया है । समाज में फैला आतंकवाद, हिंसा, अलगाववाद, दंगे- फ़साद आदि समस्याओं के कारण समाज में अराजकता का माहौल बना हुआ हैइंसान । आपस में लड़ रहें हैंचारों । ओर अविश्वास, बैर, मनमुटाव आदि का बोलबाला हैइससे । अपने वतन को ही खतरा हो सकता हैकवि । इसी समस्या की ओर इंगित करते हुए कहते है-

सुलग" रहा है, अपना वतन जरा सोचो, लगी है आज ये कैसी अगन जरा सोचो।

गज़ब तो ये है परिंदा नजर नहीं आता, उजड़ रहा है गुलों का चमन जरा सोचो15।"

कवि यहां हमें सचेत कर रहें हैं किअपने , देश पर संकट आया है, जिसके बारे में हमें अब सोचने की जरूरत हैइसी । प्रकार एक अन्य गजल में कवि दीक्षित दनकौरी देश की हालत पर दुख जतन करते हुए आम आदमी

में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करते हैंवे । कहते हैं कि, आज अपने देश की हालत दुल्हन की उस पालखी जैसी हुई है, जिसे कभी भी कोई भी लूटकर ले जाता हैइसे । स्पष्ट करते हुए कवि कहते हैं -

ज्यों" लूट ले कहार की दुल्हन की पालखी, हालत यही है आजकल हिंदोस्तान की16।"

यहाँ कवि देश की हालत पर चिंता प्रकट करते हैइसी । प्रकार समकालीन हिंदी ग़ज़लों में सांस्कृतिक चेतना को भी बखूबी प्रस्तुत किया गया हैप्रस्तुत । ग़ज़ल में कवि गाँव की मिट्टी, हरी,भरी प्रकृति- खेत- ख़लिहान , बचपन ,धरती माँ की स्मृतियों को याद कर रहा हैजिसमें । सांस्कृतिक चेतना स्पष्ट झलकती नजर आती है । वे कहते हैं -

माँ" ने बचपन में सुनाया जिस को लोरी की तरह, अब हक़ीकत में वो जंगल की कहानी देख ली।

एक नन्हा ख्वाब मेरा खो गया जाने कहाँ, गाँव देखा ,शहर देखा, राजधानी देख ली 17।"

इसी के साथ- साथ समकालीन हिंदी कवियों ने अपनी ग़ज़लों में मनोवैज्ञानिक चेतना को भी अभिव्यक्त किया हैमनुष्य । के अकेलेपन, कुंथदुख ,घुटन , एवं वेदना, अनास्था, विद्रोह, संघर्ष आदि मनोवैज्ञानिक समस्याओं को सूक्ष्मता से उद्घाटित किया हैव्यक्ति । के आंतरिक द्वंद्व, मानवीय संवेदनाओं को कवियों ने अत्यंत सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया हैइसी । के साथ व्यवस्था के विरोध में व्यक्ति के संघर्ष को भी प्रस्तुत किया हैमनुष्य । में व्याप्त घृणा, बेबसी, लाचारी आदि को भी कवियों ने मार्मिकता के साथ व्यक्त किया हैसमाज । में व्याप्त मूल्यहीनता को उक्त गजल में सुंदरता से प्रस्तुत किया हैअमानवियता । का मार्मिक चित्र हम उक्त ग़ज़ल में देख सकते हैंउक्त । ग़ज़ल में कवि कहते है कि, आदमी का ये शहर अब जंगल बन गया हैयहां । मानवता मर- सी गयी है अपने ।ही पराये हो गये हैं अब ।इस शहर में कोई अपना नहीं दिखाई देतायही । सच्चाई है, जिसे कवि ने निम्नप्रकार से प्रस्तुत किया हैवे । कहते हैं -

हो " गया कितना पराया इस शहर का आदमी, हो के अपना हो ना पाया इस शहर का आदमी।

एक ..... जंगल हो गया है आदमी का ये शहर, आदमी ने बेच खाया इस शहर का आदमी 18।"

यहां कवि ने वर्तमान समाज की वास्तविकता को अत्यंत मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त किया है जहां ,आदमी का शहर अब जंगल लगने लगा है ।आदमी ने ही शहर के आदमी को बेचकर खाया हैसमाज । में व्याप्त इस अमानवीयता को कवि बखूबी प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष :निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, समकालीन हिंदी गजलों ने सही अर्थ में चेतना के विविध आयामों को अत्यंत मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त किया है फिर ।चाहे सामाजिक हो या राजनीतिक, धार्मिक हो या पारिवारिक, राष्ट्रीय हो या सांस्कृतिक ,मनोवैज्ञानिक हो या फिर पर्यावरणीय, सभी आयामों को चित्रित किया हैजिनमें । विभिन्न समस्याओं, विषमताओंसंघर्ष , आदि को देखा जा सकता हैसमाज । में व्याप्त शोषण,भ्रष्टाचार , गरीबी, भूखमरी,अन्याय , दुख एवं वेदना, वर्गभेद, सामाजिक विषमता, भ्रष्ट शासन व्यवस्था, आम आदमी का संघर्ष, विद्रोह, हिंसा, अपराध, आतंकवाद, साम्प्रदायिक्ता,अधर्म , अमानवियता संस्कृति ,पर्यावरण ,आदि का ऱ्हास, मूल्यहीनताअंतरद्वन्द्व , आदि सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण समकालीन हिंदी गजलों में हुआ हैइन । गजलों में समकालीन कवियों ने अत्यंत सूक्ष्मता के साथ चेतना के विविध आयामों को अभिव्यक्त किया हैइसमें । विशेष रूप से भ्रष्ट शासन व्यवस्था का असली चेहरा समाज के सम्मुख लाना एवं इस व्यवस्था के खिलाफ आम आदमी को संघर्ष करने की प्रेरणा देना है । प्रस्तुत शोध आलेख में चेतना के इन्हीं विभिन्न आयामों पर विस्तार से प्रकाश डालने का सफल प्रयास किया है ।

संदर्भ :

१ .कुमार दुष्यंत, साये में धूप, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-पृष्ठ , ३०

२. डॉ .नवाब सादिका, संपा. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल,प्रस्तावना , प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
३ .गोन्डवी अदम, धरती की सतह पर, अनुज प्रकाशन, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ- ४३
४ .कुमार दुष्यंत, साये में धूप, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-पृष्ठ , १३
५ .बिस्मिल राम प्रसाद, धूप में साया, राजपाल अँड संसनई , दिल्ली-पृष्ठ , १८
६ .समीप हरेराम, कुछ तो बोलो, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- २७
७ .रेड्डी राजेश, उड़ानवाणी , प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- ३३
८ .गोन्डवी अदम, धरती की सतह पर, अनुज प्रकाशन, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ- ३७
९ .बिस्मिल राम प्रसाद, थोडासा आसमान, राजपाल अँड संसनई , दिल्ली-पृष्ठ , ८०
१०. नीरज गोपालदास, बादलों से सलाम लेता हूँ डायमंड ,पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली-पृष्ठ , २३
११. मिश्र शरद, संपादक प्रणय, शरद सर्जनागजल : खंड तीन, पंकज बुक्स दिल्ली, पृष्ठ- १०४
१२. विराट चंद्रसेन, समकालीन हिंदी ग़ज़लकारएक : अध्ययन, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली-पृष्ठ , ७८
१३. वही, पृष्ठ- ७९
१४ .मिश्र शरद, संपादक प्रणय, शरद सर्जनागजल : खंड तीन, पंकज बुक्स दिल्ली, पृष्ठ- १२२
१५. सिन्हा अनिरुद्ध, तुम भी नहीं, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-पृष्ठ , ३३
१६. दनकौरी दीक्षित:गजल ,.संपा , दुष्यंत के बाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- ४१
१७. निश्चल ओमराम ,.संपा ,दरश मिश्र की ग़ज़लें, सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- ६१
१८. अस्थाना रोहिताश्व, संपा नवीनतम ,.हिंदी ग़ज़लें, सामाईक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- ९३

****